आलेख

गांधी विशेषांक

गांधीजी और मूल्यपरक शिक्षा

• रमेश पोखरियाल 'निशंक'

महान् गांधीवादी नेता और दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला ने कहा कि 'शिक्षा वह हथियार है, जिससे दुनिया बदली जा सकती है।'

विश्वगुरु रहे भारत ने अत्यंत प्राचीन काल से ही पूरे विश्व को ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया है। तक्षशिला, वल्लभी और नालंदा विश्वविद्यालय समेत कई ऐसे प्रकाश-स्तंभ थे, जहाँ धर्म, आयुर्वेद, ज्योतिष, वास्तुकला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, ज्ञान, दर्शन, संस्कृति और संस्कार के प्रकाश से पूरा विश्व आलोकित होता था। कई देशों से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन करने के लिए आते थे। समय बदला, इसके साथ ही भारत का इतिहास भी बदला। विदेशी आक्रांताओं ने भारत पर कई सौ वर्षों तक शासन किया और उन्होंने अपनी सत्ता की संपूर्ण ताकत से भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और चेतना की विरासत को कुचलने का प्रयास किया। आज आधुनिकता की दौड़ में हम परिवार के अंदर ही बँटकर रह गए हैं, मूल्यों की अनदेखी कर हम नैतिकतावादी प्रगति को सर्वस्व मान रहे हैं। खुद को हमने कंप्यूटर तक सीमित कर लिया है और स्मार्टफोन को ही अपनी दुनिया मान बैठे हैं। नैतिकतावाद की इस चुनौती का मुकाबला हम केवल मूल्यों के आधार पर कर सकते हैं। भारतीय संस्कृति परंपरा से उपजे ये शाश्वत मूल्य हमारी हर चुनौती में मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। मेरा मानना है कि इन जंजीरों और बेड़ियों से बाहर निकलने में बापू के विचार हमारे लिए मददगार साबित हो सकते हैं। गांधीजी जो कहते थे, वह करते थे, उसे यथार्थ में जीकर दिखाते थे। गांधीजी सदैव भारतीय संस्कृति परंपराओं के समर्थक रहे। वे भारतीय संस्कृति को असाधारण और तथ्यपूर्ण मानते थे।

हमारी संस्कृति में सर्वत्र गुरु-परंपरा का परिदृश्य देखने को मिलता है। विश्व में अपने किस्म की विलक्षण गुरुकुल परंपरा से न केवल हमने अध्ययन की समृद्ध परंपरा को स्थापित किया, बल्कि शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश कर नागरिकों के श्रेष्ठ चरित्र निर्माण में सफलता पाई। शिक्षा पर गांधीजी का चिंतन परम उच्च सत्य तक पहुँचाने का था। अगर हम दृष्टिपात करें तो पाएँगे कि उन्होंने जो भी काम उठाया या जो भी सुझाव दिया, उसे उन्होंने व्यक्तिगत तौर पर जीवन में सफलतापूर्वक उतारा। गांधीजी की सबसे बड़ी ताकत उनका नैतिकता से गहरा संबंध और सत्य के प्रति उनकी अगाध निष्ठा थी। गांधीजी उन मूल्यों की बात करते थे, जो जीवन की आधारशिला है। 'माता-पिता के लिए आदर', 'अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनना', 'दिल में करुणा का होना' और साम्राज्य से मुक्ति के लिए संघर्ष के संदर्भ में निडरता का होना जैसी बातें उनके लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण थीं। अपने व्यक्तिगत प्रयोगों से जीवन के अनुभवों से उन्होंने कुछ सिद्धांत बनाए और सबके साथ बाँटे।

सुप्रसिद्ध लेखक एवं राजनीतिज्ञ। विविध विधाओं पर अब तक चार दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। अनेक पुस्तकों का विदेशी एवं भारतीय भाषाओं में अनुवाद। देश एवं विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में रचनाएँ शामिल तथा साहित्य पर शोध कार्य हो रहे हैं। उत्कृष्ट साहित्य-सृजन के लिए देश के तीन राष्ट्रपतियों द्वारा सम्मानित एवं अन्य प्रतिष्ठत सम्मान। संप्रति केंद्रीय मानव संसाधन एवं विकास मंत्री।

गांधीजी ने सदैव धार्मिक ग्रंथों से भारतीय संस्कृति-परंपरा से प्रेरणा पाने की बात कही, इसका मुख्य कारण यह था कि भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत की जड़ें इतनी गहरी और कालजयी हैं कि सत्ता की क्रूर तलवारें भी इनके आगे खुद हार गईं। सिकंदर, खिलजी, मुगलों के वंशजों को भी भारतीय संस्कृति ने अपने में समाहित कर लिया। आज एक बार फिर हमारा देश मोदीजी के नेतृत्व में नई शिक्षा नीति के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान और आध्यात्मिक मूल्यों के बल पर 'विश्वगुरु' बनने की राह पर तीव्र गति से गतिमान है। 'नई शिक्षा नीति' भारतीय मूल्यों पर आधारित है। यह नीति नवाचार युक्त होने के साथ भारत केंद्रित भी है। श्रेष्ठजनों के व्यक्तित्व और कृतित्व से हमारे अपेक्षित, कमजोर वर्ग के लोग कैसे लाभान्वित हो पाएँगे, यह विचार करने का प्रश्न है। गांधीजी सामाजिक उन्नति में शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानते थे। उनका मूलमंत्र था कि 'शोषण-विहीन समाज की स्थापना' करनी चाहिए। शोषण विहीन समाज के निर्माण के लिए शिक्षा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, शायद यही कारण था कि गांधीजी

ने शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों की स्पष्ट व्याख्या कर देश के लिए प्रारंभिक शिक्षा-योजना का खाका प्रस्तुत किया।

गांधीजी का शिक्षा-दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। विज्ञान, शोध, प्रौद्योगिकी ने निसंदेह हमारे समाज को बदला है, जीवन की राह को आसान बनाया है, परंतु इस वैज्ञानिक और भौतिक प्रगति का एक स्याह पक्ष भी है। भौतिक विकास की दिशाहीन दौड़ में हमारी युवा पीढ़ी गौरवशाली भारतीय संस्कृति, संस्कार और आध्यात्मिक मूल्यों की विरासत से दूर होती दिखाई दे रही है, जिसका परिणाम है कि आज की युवा पीढ़ी में जीवन में आने वाली चुनौतियों, परिस्थितियों और समस्याओं का सामना करने में मानसिक रूप से कमजोर है। उनमें मूल्यों और जीवन में चुनौतियों का सामना करनेवाले संस्कारों का अभाव दिखाई देता है। हमारे संस्कार और जीवन में अपनाए गए आध्यात्मिक मूल्य ही जीवन में आनेवाली परिस्थितियों और चुनौतियों को सफलतापूर्वक सामना करने में हमें आत्मिक रूप से समर्थ और बलशाली बनाते हैं।

यह हमारा दुर्भाग्य था, जब अपने देश इंग्लैंड से देशभक्ति दिखाते हुए सन् १८३५ में लार्ड मैकाले द्वारा भारत में अंग्रेजी शिक्षा लागू करके भारतीय ज्ञान, विज्ञान, सांस्कृतिक विरासत और संस्कार की शिक्षा को ही पाठ्यक्रम से हटा दिया गया। अंग्रेजी शिक्षा का लक्ष्य ही था कि लोग शरीर से भारतीय हों, परंतु संस्कार और संस्कृति से मानसिक रूप से अंग्रेजी संस्कृति के गुलाम बनाए जाएँ। अंग्रेजों के यहाँ से जाने के बाद अभी भी अंग्रेजी की मानसिकता से हमें स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हुई है। आज भी हम हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा विदेशी भाषा को विदेशी तौर-तरीकों को महत्त्व देते हैं। अच्छी बात यह हुई है कि देश-विदेश में आज मूल्यपरक शिक्षा की बात जोर पकड़ रही है। चाहे आतंकवाद की समस्या हो, मौसम-परिवर्तन की चुनौती हो, वैश्विकता के विरोध को दूर करने का विषय हो, सामाजिक-आर्थिक विषमता दूर करने का विषय हो या डिजिटल डिवाइड को कम करने की बात हो, हर चुनौती का मुकाबला मूल्य आधारित शिक्षा से किया जा सकता है। हाल में हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०१९ का मसौदा-पत्र जारी करके लोगों के सुझाव माँगे हैं। मुझे खुशी है कि भारतीय मूल्य-आधारित संस्कार युक्त, संस्कृति-आधारित शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के काफी सुझाव हमें प्राप्त हुए हैं।

वर्तमान संसार की परिस्थितियों में युवाशक्ति के बल पर एक नए भारत का नवनिर्माण करने के लिए मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना समय की आवश्यकता है।

इस मूल-मंत्र को फलीभूत करने के लिए एक ऐसी शिक्षा-नीति की आवश्यकता थी, जो व्यावहारिक हो, जो शहरों के साथ-साथ ग्रामीण शिक्षार्थियों के लिए भी उपयोगी हो, जो अगड़े-पिछड़े का भेद मिटा दे, जो संपूर्ण समाज को एक प्रगतिशील दिशा दे सके, एक ऐसे समाज का निर्माण कर सके, जहाँ हर एक के पास आजीविका का साधन हो। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का आदर्शवादी व्यक्तित्व और कृतित्व इसी प्रकार की शिक्षा की वकालत करता है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। अत: गांधीजी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है। उनका मूलमंत्र था—'शोषण-विहीन समाज की स्थापना करना'। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। अत: गांधीजी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों की व्याख्या की, वह प्रारंभिक शिक्षा-योजना उनके शिक्षादर्शन का मूर्त रूप है। उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था, वह अद्वितीय था। उनका मानना था कि 'मेरे प्रिय भारत में बच्चों को ३ एच की शिक्षा अर्थात् head hand heart की शिक्षा दी जावे।' हम उन्नत भारत का सपना तभी साकार कर सकते हैं, जब हम गांधीजी द्वारा दिए गए तीन सूत्रों head hand और heart के साथ शिक्षा को पूरे मनोयोग से विद्यार्थियों तक पहुँचा सकें। स्वामी विवेकानंद ने कहा था—''शिक्षा ही मनुष्य के सर्वोन्मुखी विकास का एकमात्र साधन है।'' अत: 'नई तालीम' के द्वारा हम बच्चों में एक नई वैचारिक क्रांति जगा दें, जो स्वयं सक्षम हों, स्वावलंबी बनें। वे सजग बनें, जागरूक बनें, वे देशनिर्माण में सहयोगी बनें, उनमें सृजनात्मकता का पूर्ण विकास हो, यही नई तालीम है। इन सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप देने में 'शिक्षक' की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि नई शिक्षा नीति के माध्यम से, नवाचार अनुसंधान के माध्यम से हम नव भारत के निर्माण में अपने अध्यापकों को प्रेरित कर पाएँगे।

नई शिक्षा नीति के माध्यम से महात्मा गांधी के सपनों को पूरा करने का हमने संकल्प लिया है।

आध्यात्मिक और मानवीय मूल्य जीवन के निराशा और हताशा के क्षणों में आशा और आत्मबल की शक्ति का संचार करके मनुष्य को एक बार फिर नई उड़ान भरने योग्य बना देते हैं। नई शिक्षा नीति में हमने ध्यान रखा है कि इन मानवीय मूल्यों को केवल शिक्षा के माध्यम से छात्रों के भीतर विकसित किया जा सकता है।

सा
अ

१३, तीन मूर्ति लेन
नई दिल्ली-११०००१